335

Dr. Abha Singh

7

Information Explosion and the 21st Century Youth: Prospects and Challenges

38

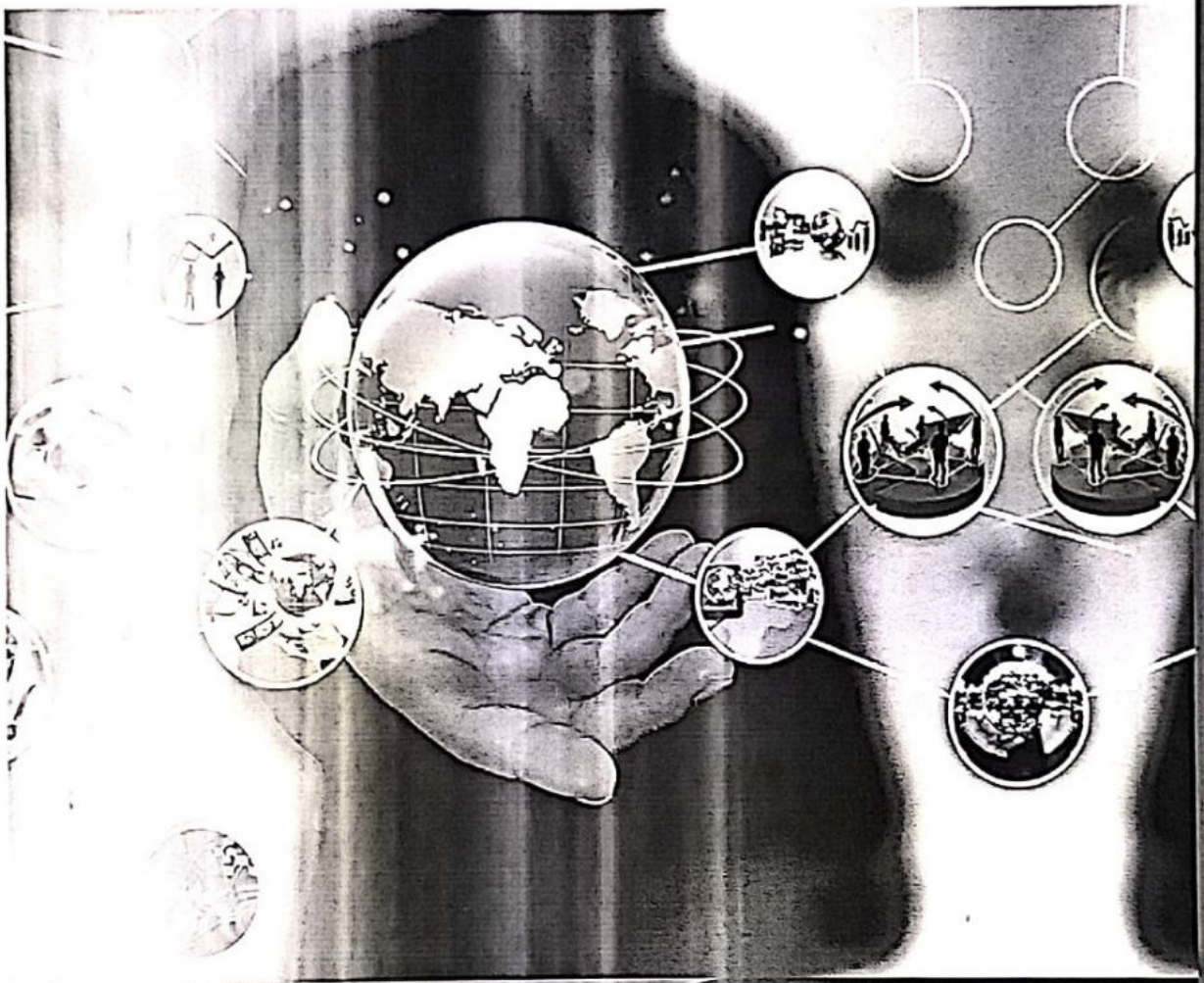

Chief-Editor
Dr. Shivani Verma

Editors
Dr. Deepti Bajpai
Dr. Satyant Kumar

Scanned by CamScanner

४३

इक्कीसवीं सदी के सूचना युग में स्त्री अस्तित्व और अस्मिता की चेतना

आभा सिंह

सारांश

इक्कीसवीं सदी के सूचना युग का समय चक्र तीव्रता से अपनी धुरी पर घूम रहा है। परिवर्तन के शाश्वत स्वरूप में विविधताएँ जहां आई, वहीं उसके अनेक आयाम भी सामने आ रहे हैं। प्रकृति में फैली, पसरी प्रकृति की लीलाऐं मनुष्य के लिए सदैव चिंतन का विषय रही हैं। मनुष्य में प्राकृतिक घटनाओं को देखकर उसके चिंतन में एक महान शक्ति की कल्पना उत्पन्न हुई कि संसार को चलाने वाली कोई शक्ति है। इस शक्ति को जानने की चेतना मनुष्य में उत्पन्न हुई और स्त्री में भी। संचार वास्तव में हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में एक प्रकार से जीवंत रक्त का प्रवाह करता है। अति सूक्ष्म स्तर पर, यह लोगों तक पहुंचकर और भागीदारी से अथवा व्यवहार में बदलाव के जरिए उन्हें सक्रिय बनाकर विकास और सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया की दिशा प्रदान करता है। इसी सूचना क्रांति से नारी में जन्मे विचार, नारी को न केवल स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा नहीं दे रहे हैं बल्कि आदि काल से चले उसका शोषण और उत्पीड़न होता रहा है, उसके विरूद्ध संघर्ष करने की शक्ति प्रदान कर रहे हैं। स्वतंत्रता के 70 वर्षों में और 21वीं सदी में नारी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि जैविक आधार पर उसे अब द्वितीय पायदान पर नहीं रखा जा सकता है और न ही हाशिए पर।

मानव समाज में संचार की व्यापक भूमिका है। यह प्रिंट अथवा श्रव्य-दृश्य प्रारूप में सूचना, मौखिक, गैर-मौखिक, शब्दों के आदान-प्रदान के लिये विभिन्न प्रणालियों के जरिए सामाजिक संबंधों की प्रक्रिया को प्रारंभ करता है। संचार वास्तव में हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में एक प्रकार से जीवंत रक्त का प्रवाह करता है। अति सूक्ष्म स्तर पर, यह लोगों तक पहुंचकर और भागीदारी से अथवा व्यवहार में बदलाव के जरिए उन्हें सक्रिय बनाकर विकास और सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया की दिशा प्रदान करता है।

आज का यह सूचना युग आधुनिक वर्तमान युग का एक ऐतिहासिक परिवर्तन है जो निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। जो आधुनिक प्रबुद्ध एवं आम लोगों को नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत आचरण के मूल्यों और प्रतिमानों के बारे में नये आधारों को चुनाने की स्वतंत्रता दे रहा है।[1] इस आधुनिकता का उद्देश्य एक अन्वेशण होना चाहिए जो मिथक से यथार्थता का बोध कराता हो।[2] इस संरचना में नये मूल्य, आदर्श, चिन्तन, मानसिकता की उत्पत्ति होती है जो सामूहिक व परिवार के विचारों से हटकर वैयक्तिक बन जाती है।[3] और इस सूचना युग में जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो जोर केवल महिलाओं को शक्ति देने पर ही नहीं

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

Scanned by CamScanner

होता अपितु उन्हें मुख्य धारा में लाने पर होता है ताकि वे आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी करें और विकास में योगदान करें।[4] महिला सशक्तिकरण का अभिप्राय मात्र अबला से सबला बनाना नहीं है बल्कि उसके चहुँमुखी विकास से है। शाब्दिक अर्थों में महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं का शक्ति सम्पन्न व साधन सम्पन्न होना है। शक्ति व साधन दोनों ही जीवन की गुणात्मकता से जुड़ी हुई अवधारणाएँ है। जीवन की गुणात्मकता व्यक्ति के जीवन स्तर, जीवन संतोष, सुख-समृद्धि, विकास व उन्नति के अवसरों का एक समग्र मूल्यांकन है।[5] जिसे प्राप्त करने के लिए स्वयं के जीवन पर नियंत्रण, निर्णय क्षमता, संसाधनों का उचित उपयोग, सुरक्षा, वांछनीय शैक्षणिक व आर्थिक जीवन स्तर तथा विशेषरूप से अपने-आप को पहचानना और क्षमताओं व साधनों के अनुरूप अपनी उन्नति की ओर बढ़ना।[6]

आधुनिक औद्योगिकी संपन्न समाज संचार माध्यमों की सहायता से लोगों के जीवन और रहन-सहन में सुधार के लिये सम्प्रेषण शक्ति का उत्कृष्ट प्रयोग कर रहा है। वर्तमान युग में मानव जीवन और जनमाध्यमों के नियंत्रण ने, समाज में बदलाव की एक अनिवार्य पूर्वपेक्षा, लोगों में भागीदारी की भावना जगाने के लिये जबरदस्त ताकत बढ़ाई है।

इन दिनों उन्नत संचार उपकरणों से सुसज्जित मास मीडिया, एक शक्तिशाली बल के तौर पर, हमारे जीवन और रहन-सहन, हमारे मनोभाव और धारणा पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। आज के भारत में प्रिंट, दृश्य और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में एक प्रभावी संदेशवाहक और परिवर्तनकारी एजेंट के तौर पर, और इस तरह अलग-थलग पड़ी वंचित महिलाओं के एक बड़े हिस्से को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने की व्यापक क्षमता है।

निःसंदेह, उपग्रह प्रौद्योगिकी के इस युग में संचार माध्यमों की दुनिया सार्वजनिक बहस, संवाद और आमना-सामना करने के लिये व्यापक किस्म के मंच प्रदान करता है। सोशल मीडिया ने समय, स्थान और सूचना के आदान-प्रदान की मात्रा की कोई परंपरागत सीमा से बाधित हुए बगैर, परस्पर सम्प्रेषण और जुड़ाव का एक नया मार्ग खोल दिया है।

सूचना संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने सम्प्रेषण कवरेज के दायरे और पहुंच को और विस्तारित कर दिया तथा शिक्षा, औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों, कौशल विकास, क्षमता-निर्माण, वित्तीय समावेशन, स्वास्थ्य देखभाल आदि के लिये अवसर बढ़ा दिये हैं।

सूचना प्रोधौगिकी और इक्कीसवीं सदी में स्त्री द्वारा अपने अस्तित्व और अस्मिता की चेतना -

आज के इस सूचना युग में इक्कीसवीं सदी के दस्तक देने पर नारी सोचने लगी है कि उसके जीवन का क्या अर्थ है? मात्र लड़की बने रहना। पत्नी बनना। बच्चों को जन्म देना और मां बनकर अपनी मां, दादी, नानी की तरह घर के पिंजरे में बंद हो जाना। वही खाना जो रोज मिलता है। वही बोली रोज सुनने को मिलती है। वही रति का तेवर, जो सदियों से संयुक्त परिवार में देखा गया, आज भी देखने को बहुत कुछ मिलता है। प्रश्न है क्या नारी का संसार बंधनों तक ही है? क्या इसके अतिरिक्त भी उसकी कोई दुनिया है? क्या परिवार से हटकर भी उसका कोई व्यक्तित्व है? उसकी समाज में कोई पहचान है और नही है तो क्यो? इस क्यों के अर्थ में नारी की अस्मिता और अस्तित्व जुड़ा है।

इक्कीसवीं सदी के सूचना युग का समय चक्र तीव्रता से अपनी धुरी पर घूम रहा है। परिवर्तन के शाश्वत स्वरूप में विविधताएँ जहां आई, वहीं उसके अनेक आयाम भी सामने आ रहे हैं। प्रकृति में फैली, पसरी प्रकृति की लीलाऐं मनुष्य के लिए सदैव चिंतन का विषय रही हैं। मनुष्य में प्राकृतिक घटनाओं को देखकर

Scanned by CamScanner

उसके चिंतन में एक महान शक्ति की कल्पना उत्पन्न हुई कि संसार को चलाने वाली कोई शक्ति है। इस शक्ति को जानने की चेतना मनुष्य में उत्पन्न हुई और स्त्री में भी। इस चेतना ने व्यक्ति को कहीं आध्यात्मिक बना दिया। मीरा इसी का उदाहरण हैं और वैदिक युग की विदुषी नारियां भी।

इक्कीसवीं सदी की नारी चेतना, आर्थिक-सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तनों तथा घटनाओं से उपजी है, जो सूचना युग की देन है। आज नारी की अस्मिता अपने उबाल पर है। नारी चेतना से जन्मे विचार नारी को केवल स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा नहीं दे रहे हैं बल्कि आदि काल से जो उसका शोषण और उत्पीड़न होता रहा है, उसके विरूद्ध संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करते हैं। यही कारण है कि नारी मुक्ति आन्दोलन समाज में अपना स्थान बना चुका है। वह इस पूंजीवादी व्यवस्था में देह-सौन्दर्य के सिद्धान्त के विरूद्ध खड़ी हुई है। आज के इस सूचना युग में नारी, प्रगतिशील और अर्थयुग में अपने अस्तित्व की पहचान कराने हेतु मर्दवादी समाज से संघर्ष कर रही है। वह पुरूष की तरह परिवार और समाज की इकाई है। आज के इस सूचना समाज के बदलते दौर में नारी यह एहसास कराने के लिए वह संघर्षरत है कि स्वतंत्रता के 70 वर्षों में और 21वीं सदी में नारी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि जैविक आधार पर उसे अब द्वितीय पायदान पर नहीं रखा जा सकता है और न ही हाशिए पर। वह अगर सेना में अधिकारी बन सकती है तो पुलिस विभाग में आई.पी.एस. भी बन सकती है और आई.ए.एस. में टॉप भी कर सकती हैं। आज अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियों में वह शीर्ष पदों पर है। राजनीति में मुख्य-मंत्री के पद पर आसीन है। हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक परिस्थितियों से जन्मी चेतना में नारी अस्मिता को एक ठोस पहचान दी है और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वह स्वयं को सुदृढ़ कर रही हैं।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की क्रियाशीलता बढ़ाने के लिए भारतीय संविधान में महिलाओं को आरक्षण प्रदान कर राजनीतिक विकास की ओर अग्रसर किया गया। अब स्त्रियों का राजनीतिक क्षेत्र में पर्दापण दायित्व बन गया। वह अपने अधिकारों की वास्तविक लड़ाई में खुद ही जागरूक और अग्रसर होने लगी। महिलाओं के राजनीतिक विकास और उनकी भागीदारी का इतिहास देखें, तो भारत की राजनीति में सर्वोच्च स्थान पर 'श्रीमती इंदिरा गांधी' का आसीन होना तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में 'श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित' और 'श्रीमती सरोजनी नायडू' का विशेष स्थान महिला जागृति का एक शुभ संकेत है।

भारत में कुछ महिलाओं ने स्वयं के बलबूते पर अपना राजनीतिक क्षेत्र बनाया, जिनमें सोनिया गांधी, सुपमा स्वराज, उमा भारती, ममता बैनर्जी, गिरिजाव्यास, मेनका गांधी, आदि प्रमुख हैं। इन महिलाओं ने अपनी प्रतिभा, सूझबूझ और लगन से राजनीति के क्षेत्र में सफलता हासिल की है।

अब तक हुए चुनावी आंकड़ों से पता चलता है कि सभी राजनीतिक क्षेत्र में हुए चुनावों में महिला उम्मीदवारों की उपेक्षा हुई है। वर्ष 1994 के लोकसभा चुनाव में कुल 284 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं, जिसमें 49 महिलाओं ने जीत हासिल की थीं। वर्ष 2004 के चुनाव में 355 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं, लेकिन उनमें केवल 45 महिलाऐं ही लोकसभा में पहुंच पाईं। इसी तरह वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में 556 महिला उम्मीदवार चुनावी मैदान में थीं, जिनमें से 59 महिलाऐं 15वीं लोकसभा में अपनी जगह बना पाईं और आजादी के बाद यह सबसे बड़ा प्रतिशत था, जिसके बाद में दो महिलाऐं डिम्पल यादव लोकसभा मध्यावधि चुनाव 2012 में उत्तर प्रदेश के कन्नौज से और गिरिजा व्यास जून, 2013 में चुनकर आईं। इस तरह यह तादाद बढ़कर 161 हो गई। ज्ञात हो कि छठी लोकसभा में यह महिलाओं की भागीदारी केवल 3.8 प्रतिशत था, पहली लोकसभा में यह केवल 4.4 प्रतिशत ही था। 13वीं लोकसभा में लगभग 9.2 प्रतिशत महिलाऐं लोकसभा में थीं

Scanned by CamScanner

[illegible] में यह सबसे अधिक 10 प्रतिशत था। 16वीं लोकसभा में 61 महिला उम्मीदवार जीत कर पहुँची [illegible] सर्वाधिक आंकड़ा है। वर्तमान लोकसभा में पुरूषों की सफलता दर 6.4 फीसदी है, जबकि [illegible] की सफलता दर 9.3 फीसदी है।

[illegible]जनीति में आने के साथ-साथ महिलाओं ने खेलों की दुनिया में भी अपना सितारा बुलंद किया है। [illegible] का खेलों में आगे आने के लिये क्रांति लाने का पूरा श्रेय दो खिलाड़ियों सानिया मिर्जा और सायना [illegible] जाता है जिन्होंने टेनिस और बैंडमिंटन में एक पूरी पीढ़ी को प्रेरित किया है। सानिया और सायना [illegible] में नंबर वन रही हैं और उनके नक्शे कदम पर चलते हुये कई लड़कियां इन खेलों में आगे आ [illegible]

[illegible] और सायना के साथ अब एक नाम महिला जिमनास्ट दीपा करमाकर का जुड़ गया है जिन्होंने [illegible] होने की कठिनाई के बावजूद जिमनास्टिक में अपने लिए एक ऐसा मुकाम बना लिया है कि [illegible] खेल इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया है। दीपा 52 वर्षों बाद ओलम्पिक जिमनास्टिक में [illegible] भारतीय महिला खिलाड़ी बनी और उन्होंने चौथा स्थान हासिल कर अपना नाम भारतीय खेलों [illegible] में स्वर्णाक्षरों में दर्ज करा लिया। त्रिपुरा की दीपा अब भारतीय खेलों में अब एक ऐसा नया नाम बन [illegible] गर्व किया जा सकता है। यह कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है बल्कि एक मील का पत्थर है।

[illegible] समाज के युग में बदलता नजरिया : बड़े बदलाव की जरूरत

[illegible] ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली पहली भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी बनीं सायना का कहना [illegible] देश को नई प्रेरणा मिलेगी जो लड़कियों को खेलों में लाने के लिए आदर्श स्थान नहीं [illegible]। सायना ने तब अमेरिकी पत्रिका टाइम को दिए साक्षात्कार में कहा था, 'भारत में मुझे लगता है कि [illegible] रूढ़िवादी होती हैं। वे घर से बाहर नहीं आती हैं और खेलों में नहीं उतरती हैं लेकिन मैं उम्मीद करती [illegible] सायना की सोच बदलेगी और ज्यादा से ज्यादा लड़कियां खेलों में आगे आने के लिए तैयार होंगी। [illegible] में प्रशिक्षण लेती हूं, वहीं पर मैं इस बदलाव को महसूस कर रही हूं। वहां ज्यादा लड़कियां [illegible] खेलना चाहती हैं।'

[illegible] महिला अधिकारिकता की ब्रांड एम्बेसेडर बनीं सानिया मिर्जा की छवि एक विद्रोही खिलाड़ी [illegible], अपनी शैली और अपनी बेबाक टिप्पणियों से पुरूष प्रधान समाज को हमेशा निशाने [illegible] का पता इसी बात से चलता है कि उन्होंने पाकिस्तान के क्रिकेटर शोएब मलिक [illegible] बात को लेकर देश में काफी विरोध भी हुआ। सानिया आज एक रोल मॉडल हैं और [illegible] उन जैसा बनना चाहती हैं।

[illegible] का पता इसी बात से चलता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपकी कितनी महिला [illegible]। दिल्ली में 2010 में हुये राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के 100 से ज्यादा पदकों में 37 [illegible] ही जीते थे। यानि भारतीय संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को एक तिहाई [illegible] राष्ट्रमंडल खेलों में महिला खिलाड़ियों ने एक तिहाई पदक जीत लिये जबकि [illegible] गणना थी।

[illegible] अनुसार, 1992 के बार्सिलोना ओलम्पिक में भारत की छह महिला खिलाड़ियों ने ओलंपिक [illegible] बाद 2012 के लंदन ओलम्पिक में यह संख्या 23 पहुंच गयी। उसके चार साल रियो

Scanned by CamScanner

ओलम्पिक में 54 पहुंच गयी। इस तथ्य से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि पिछले लगभग 25 वर्षों में भारतीय खेलों में महिलाओं की भागीदारी की स्थिति कितनी बदल चुकी है। केवल खेलों में ही नहीं, बल्कि खेलों के प्रशासन में भी महिलाऐं तेजी से आगे आ रही हैं साथ ही, राष्ट्रीय कोच, रेफरी, मैनेजर, अधिकारी और खेल पत्रकार बन रही हैं।

प्रधानमंत्री ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की योजना शुरू की है जिसका समाज में असर देखने में आ रहा है। हरियाणा जैसे राज्य में लड़कियों का लिंगानुपात पहले के मुकाबले बढ़ा है। इसी योजना को खेलों में भी लागू करने की जरूरत है। यदि लड़कियों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में स्कूलों में लाया जाता है और उन्हें शिक्षा हासिल करने के लिये प्रेरित किया जाता है तो उसका सीधा असर खेलों में भी दिखाई देगा। खेलों में आने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है जो खेलों के बारे में सोचने और समझने की शक्ति देती है। इसी के साथ इस बात की भी बहुत जरूरत है कि स्कूली पाठ्यक्रम में खेलों को अहम हिस्सा दिया जाये। अगर जीवन की शुरूआत से ही लड़कियों को खेलों में दिलचस्पी होगी, वे इसे समझने लगेंगी तो निश्चित ही स्कूल स्तर पर लड़कियां ज्यादा संख्या में आगे आयेंगी और इसका असर राष्ट्रीय स्तर पर नजर आयेगा।

यह सत्य है कि पिछले 70 वर्षों में भारतीय महिलाओं के जीवन में बहु-आयामी परिवर्तन आए हैं। पहले के 25 वर्षों का परिवर्तन धीमी गति के समाचार जैसा, पर उत्तरार्द्ध के 40-45 वर्षों में परिवर्तन की गति इतनी तीव्र रही है कि उसे देखने, संभालने और सोचने-विचारने के लिए भी नारी के विकास गति को भुलाया नहीं जा सकता। बहरहाल, नारी को समान अधिकार, सुरक्षा और बराबरी का हक पाने के लिए अभी भी एक लंबा संघर्ष करना पड़ा है। उनके भी हक और अधिकार है, इसको साबित करने की जद्दोजहद जारी है। कारण हम सभी जानते हैं। निराकरण का मूल भी हमारे भीतर छुपा हुआ है। शुरूआत कहीं बाहर से नहीं अपने घर के भीतर से होगी। घर में बदलाव होगा तो दुनिया भी जरूर बदलेगी। क्योंकि सिर्फ सरकारी प्रयासों और तकनीक के सहारे महान उद्देश्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती। सबको इसमें अपनी भागीदारी देनी होगी।[7]

[illegible]

[illegible] में आशा की एक किरण उभर रही है। सम्प्रेषण के तौर पर महिलाऐं, उनका आंकड़ा चाहे जो भी [illegible] बढ़ रही हैं और अपनी आवाज उठा रही हैं। वे लैंगिक मुद्दों को नया दृष्टिकोण, परिप्रेक्ष्य और [illegible] कर रही हैं तथा संवेदना के साथ पीड़ा और मानवाधिकार उल्लंघन की कहानियों को उजागर कर [illegible] सहानुभूतिपूर्ण ग्रहणशीलता मास मीडिया और वंचितों के मध्य फिर से नये संपर्क की स्थापना के [illegible] है। अधिक से अधिक लोग अलग-थलग पड़ी महिलाओं के जीवंत अनुभवों को सही परिप्रेक्ष्य में [illegible]।

[illegible] बदल रहे इस परिदृश्य में जनसंचार माध्यम भी महिलाओं के सशक्तीकरण से संबंधित अनेक [illegible] लोकप्रिय बनाने के लिये कमर कस कर रहे हैं। दशकों से ऐसे कार्यक्रमों का फोकस जागरूकता [illegible] सामुदायिक एकजुटता के एक मजबूत घटक के साथ कल्याण से सशक्तीकरण की ओर स्थानांतरित [illegible] के अलावा अनुकूल वातावरण बनाने के लिये, संस्थागत और विधायी उपाय भी सामने आये हैं। ऐसी [illegible] में जनसंचार माध्यमों को भी अवश्य आगे बढ़ाना चाहिये और वंचित लोगों का जीवन बेहतर करने में [illegible] प्रेरक बल के तौर पर काम करने के लिये जागरूक प्रयास करने चाहिये।

[illegible] कोई संदेह नहीं है कि जनसंचार माध्यमों ने महिलाओं के सशक्तीकरण के लिये योजनाओं से

Scanned by CamScanner

लाभकारी परिणाम सामने लाने और लैंगिक अधिकारों के मुद्दों को व्यापक जन आधार के बीच उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सम्प्रेषण और नई प्रौद्योगिकियों की विशाल शक्ति ने वास्तव में भागीदारी बढ़ाने और परिवर्तन की मांग उठाने की प्रेरणा को उत्साहित किया है। आज अधिकतर महिलाऐं समाज में अपने लिये अधिकारपूर्ण स्थान के लिये संघर्ष करने की स्थिति में हैं। यह नया अर्जित विश्वास महिलाओं के बहु-आयामी विकास के लिये एक नये युग का सूत्रपात करने में बहुत कारगर साबित होगा।

संदर्भ

1. प्रसाद, डॉ. गोपीकृष्ण "विकास का समाजशास्त्र", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 97
2. सिंह, डॉ. वी.एन. "समकालीन भारतीय समाज", अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, पृ. 333
3. नीलिमा सिन्हा, आजकल, फरवरी, 2001, पृ. 7
4. गलैण्ड वूमेन एण्ड एम्पावरमेंट इलयूस्ट्रेशन, फ्रॉम थर्ड वर्ड, मैकमिलन प्रेस, 1998
5. भटनागर, एस.एस. 'वेल्यू बेस्ड क्वालिटी ऑफ लाइफ' इण्डियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकोलॉजी, 21.02.1997, पृ. 101
6. कुमार, आर.वी. 'जेण्डर इक्वालिटी एण्ड इक्विटी फॉर वीमेन एम्पावरमेंट, इण्डियन जर्नल ऑफ पापुलेशन एजूकेशन, 2001, पृ. 21-28
7. सिद्धार्थ झा, महिलाओं की सुरक्षा को उच्च प्राथमिकता, कुरूक्षेत्र, जनवरी 2018, पृ. 31

Scanned by CamScanner